हत्या से उठे सवाल

लोकतंत्र का आधार ही लोगों के पास सत्ता का होना है। यह एक अलग बात यह है देखना है कि सत्तर वर्षों बाद भी क्या लोगों के पास सत्ता है या नहीं। यदि नहीं हैं तो विचार का दोष है या विचार के अनुरूप काम करने वालों की खामी रही है। लोगों के पास सत्ता होने का भी मतलब समझना होगा। सत्ता का तात्पर्य केवल लोगो को सीधे-सीधे राज्य में भागीदारी मिलना नहीं हैं। सारे लोग तो राज्याधिकारी हो नहीं सकते हैं। इसीलिये प्रतिनिधि तंत्र है पर इसके साथ ही लोगों को अपने विचारों को व्यक्त करने की आजादी होना भी इसी लोकतंत्र का आधार है। विचारों की यह आजादी तो राम राज्य में भी थी। रामचरित्र मानस में तुलसीदास जी ने भी इस बारे में कहा है। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में तो चार्वाक को स्वीकृत करते हुए एक तरह से परम्परा के विरोध में भी अपने विचार व्यक्त करने और तदनुरूप व्यवहार करने की भी छूट रही है। इस पृष्ठभूमि में गौरी लंकेश तथा अन्य पत्रकारों पर हमले और उनकी हत्या की जाने पर विचार करके देखें और सोचें कि जो लोग भी विचारों, अपने विपरीत और विरोध में व्यक्त किये जाने वाले विचारों को रोक देना चाहते हैं उनका आशय किस तरह की व्यवस्था को कायम करने की तरफ है।

गौरी लंकेश के पहले छत्तीसगढ़ में भी एक पत्रकार की हत्या इसलिए की गई थी कि उसके सम्बन्ध नक्सलवादियों से होने की आशंका थी। एडिटर्स गिल्ड की टीम ने इस बारे में पता किया तो यही सच सामने आया था। उत्तरप्रदेश और अन्य राज्यों में खनन माफियाओं तथा राजनीतिक दबंगों की कारगुजारियों को बेपर्दा करते हुए पत्रकार मारे गए। यह भी हो सकता है कि उनमें से कुछ ने कुछ मांग की हो, पर क्या इतने पर ही किसी का जीना मुहाल किया जाना चाहिए या उसके जीवन को इसलिये समाप्त कर दिया जाना चाहिए। यह पहले भी सोचा गया था और गौरी लंकेश की हत्या के बारे, अधिक जोर से कहते हुए सोचा गया है और सोचा जाना भी चाहिए।

गौरी लंकेश के मामले में एक नया सच भी सामने आया है जो पहले मामलों में इतना खुलकर नहीं आया था। कुछ लोगों ने उसके साम्यवादी और नक्सलवादी विचारों को उसकी हत्या का दोषी माना और इसके लिए कुछ तर्क इस तरह से रखे जिससे उसका इस तरह का विचार रखना और व्यक्त करना ही उसका दोष हो। कुछ लोगों ने बहुत जोर से यह मुद्दा उठाया कि हत्या के बाद जितनी जल्दी शक कि सुई किसी एक, उनसे विपरीत विचार की तरफ उठाई गई, वह लोकतात्रिंक व्यवस्था का और वर्तमान सत्ता का विरोध करना है। यह दोनों ही बातें एक मायने में लोकतंत्र में अस्वीकार्ष हैं, न तो राज्य के विरोध में कहा जाना चाहिए और न ही किसी स्थापित विचार के विरोध में ही लिखा जाना चाहिए। हम सभी, विशेषकर मीडिया से जुड़े लोगों को एक बार इस बारे में अपनी भूमिका के बारे में सोचना होगा कि क्या मीडिया का आशय या कार्य

लोकतंत्र में राज्य, राज्याधिकारी, राज्यपोषित विचार, राज्य पोषित व्यवसायी या व्यक्ति की हाँ जी, हाँ जी ही करना श्रेयस्कर है और यही मीडिया की भी भूमिका है।

यह भी सोचिये कि राज्यतंत्र और एकतंत्र या अधिनायकवादी तंत्र में जिस तरह की भूमिका पत्रकारिता की रही है क्या ठीक वही थी और वैसी ही भूमिका लोकतंत्र में होनी चाहिए। सोचिये कि चीन या पूर्व के रूस में जो राजाश्रयी या कथित स्वतंत्र पत्रकारिता की जाती रही है या उससे पहले के जर्मनी या इटली जैसे देशों में की जाती थी, वह हमारा आदर्श हो या फिर आजादी के दिनों में महात्मा गाँधी, सावरकर, तिलक, माखनलाल चतुर्वेदी, गणेशंकर विद्यार्थी आदि की पत्रकारिता का अनुकरण हमें करना चाहिए। अंग्रेजो के राज्य में तो हमने देखा और सुना है कि कुछ पत्र ऐसे भी थे जो सरकार की प्रशंसा को ही अपने जीवन की सार्थकता मानते थे। उस कठिन समय में भी, जिन पत्रकारों का जिक्र यहाँ किया गया उनके सामने कानूनी बाधाएँ तो आई पर उनका तिरस्कार उस समय के विपरीत विचार रखने वाले लोगो ने भी नहीं किया। यह सब तो यही बताता है कि लोकतंत्र और भारतीय परम्परा में विचार स्वातंत्रय मान्य है।

मालूम नहीं क्यों यह पूरा-आख्यान इस बारे में इस सबके बीच भुला दिया जाता है। समुद्र मंथन असुर और देवताओं ने मिलकर ही तो किया था जिनके विचार और व्यवहार एक दूसरे से विपरीत थे। मंथन में विष, वारुणी आदि भी निकले तो लक्ष्मी और अमृत घट और धन्वन्तरी भी तो निकले। यह विपरीत विचारों के मंथन का ही तो परिणाम था। आज भारत की जो स्थिति है उसका भी विश्लेषण करके देख लें। आजादी के बाद के भारत की यह मजबूत लोकतान्त्रिक स्थिति क्या एकात्मक विचारों के कारण है अथवा विविध विचारों के मंथन और समावेशन की वजह से हैं। यह स्थापित तथ्य है कि एक घुरीय विचार जड़ता और अविचारता लाते हैं और विचारों की समग्रता और विविधता जैविकता के साथ नवीनता और क्रियाशीलता पैदा करती है। हत्या तो किसी की भी हो, पत्रकार या व्यक्ति की, वह निंदनीय है, पर गौरी की हत्या से यह प्रश्न भी हमारे सामने यक्ष प्रश्न की तरह ही उत्तर मांगते तो हैं।

°°°